बाबा पढ़ाते हैं, फिर ब्रह्मा दादा पढ़ते भी हैं, पढ़ाते भी हैं। अभी परमात्मा जिसको कहा जाता है वो क्या पढ़ाएँगे? ये भी लिखा तो हुआ है ना– ज्ञान का सागर है। दुनिया नहीं समझती है कि राजयोग का ज्ञान किसने दिया। दिखलाया है बरोबर कि ऊँचे ते ऊँचा परमपिता परमात्मा शिव है। उसको रुद्र भी कहते हैं। अभी शिव जयन्ती और कृष्ण जयन्ती ये तो है ही अलग। कृष्ण जयन्ती का तिथि और तारीख अलग रखते हैं, शिव जयन्ती का अलग रखते हैं। अभी कृष्ण जयन्ती का तो बहुत ही बैठ करके ये शास्त्र भी बनाए हैं, महिमा भी दिखला रहे हैं, फलाना भी किए हैं। भागवत में कितना विस्तार लिखा है। अभी शिव का तो कोई नाम ही नहीं है जास्ती और ज़रूर ये भी समझते हैं कि परमपिता परमात्मा ऊँचे ते ऊँचा है। कृष्ण के लिए अभी कहेंगे ही नहीं कि ऊँचे ते ऊँचा हुआ। इतना भी कभी सोच–विचार नहीं करते हैं कि शिवजयन्ती... उसने क्या किया। कृष्ण जयन्ती का तो... गीता का भगवान कर दिया। बच्चा कह दिया। कभी साँवरा कह देते हैं। कभी उनको गोरा कह देते हैं। उनको कभी गाँवड़े का छोरा कह देते हैं, कभी वैकुण्ठ का नाथ कह देते हैं। देखो, अभी ऐसे हो सकता है? कभी नहीं। हाँ, ये हो सकता है कि कोई गरीब है और साहूकार हो सकता है। सो तो तुम बच्चे अभी देखते हो दुनिया में....मिट्टी ढोने वाले लोग साहूकार हो गए हैं; परन्तु श्रीकृष्ण के लिए ऐसे तो नहीं हो सकता है ना। कृष्ण का तो है ही एक फीचर्स। पीछे ऐसे नहीं हो सकता है कि फीचर्स कोई गोरे का...। सो भी दिखलाते हैं जब साँवरा था तो ज़रूर गाँवड़े का छोरा होगा। गोरा था तो ज़रूर वैकण्ठ का मालिक है। ये क्या बात है! देखो, ऐसी सहज बात को भी कोई समझ नहीं सकते हैं; क्योंकि खुद जो ब्रह्मा बैठकर समझते हैं जो फिर वो बनने वाला है, जो पहले जवाहरी था, साधारण मनुष्य था। उनको थोड़े ही मालूम था कि हम कौन था। इसको पता पड़ता है ? तभी बाप आकर कहते हैं– तुम बच्चे अपने जन्मों को नहीं जानते हो। बैठ करके समझाते हैं। बच्चों को ये बात तो अच्छी तरह से समझानी चाहिए ; क्योंकि जयन्ती जब आती है तो शिवजयन्ती को भी अलग कर देते हैं वास्तव में। कृष्ण को भी अलग कर देते हैं। गीता को भी अलग कर देते हैं। गीता जयन्ती की भी तिथि–तारीख अलग रखते हैं। कृष्ण की भी तिथि–तारीख अलग रखते हैं...। कितना रोला मचा हुआ है। तो बाप आकर बच्चों को ; क्योंकि ज्ञान का सागर तो शिवबाबा को कहेंगे। सभी कृष्ण को तो ज्ञान का सागर कभी कह ही नहीं सकते हैं। वो तो बचपन में शहज़ादा था ...महाराजा। ये भी जानते हो कि स्वयंवर किया है; परन्तु देखो, ये भी सहज बात कि राधे और कृष्ण ही लक्ष्मी–नारायण हैं, वो भी बिचारों को कुछ मालूम नहीं है। बाबा ऐसे कहेंगे ना– देखो तो सही ये भारतवासी बिचारे! इस समय में बिचारे कहा जाता है भारत में और सतयुग में तो कोई ऐसे बिचारे नहीं कहेंगे ना। सतयुग में तो बात क्या है! तुम बच्चों को समझ भी आता है कि बरोबर भारत क्या था! अब बिचारा क्या बना है। ऐसे कहेंगे ना; क्योंकि साहूकार बहुत कोई होते हैं...ढेर के ढेर होते हैं, देवाला मार देते हैं, क्या कर देते हैं, सब जायदाद बिक जाती है। अभी तुम बच्चों को मालूम तो हुआ कि भारत क्या था और अभी भारत क्या है और फिर भारत को जो था सो ज़रूर बनना है। तुम बच्चे बनकर के जानते हो कि अभी हम फिर से सो देवी–देवता बन रहे हैं। अभी ये गाया भी तो हुआ है कि मानुष ते देवता किए...। अच्छा, मनुष्य जो पतित है उसको पावन मनुष्य बनाया है। तो बरोबर यहाँ सभी पतित मनुष्य अपन को कहते हैं कि हे पतित–पावन आओ। उनको ये पता नहीं पड़ता है कि भारतवासी हैं। अभी पतित हैं और फिर सतयुग में पावन थे। वो इन बिचारों को पता ही नहीं पड़ता है। वो कौन थे, वो देवी–देवता कहाँ गए, कोई हिस्ट्री नहीं है कि मनुष्य 84 जन्म लेते हैं, कैसे लेते हैं, कब लेते हैं, कौन लेते हैं। देखो, ज़रा भी पता नहीं है। ये बात तो समझने की है ना। देखो, इनका बुद्धि का ताला इतना लग जाता है जो कुछ भी उनकी बुद्धि में नहीं रहता है। अभी बच्चों को बैठकर बेहद का बाप, जिसको ही मनुष्य को देवता बनाना है या ये भारत को ही समझो कि जो आसुरी पुरी हो गई है उनको फिर ईश्वरीय पुरी कहते हैं। भले देवता पुरी भी कहें तो भी देवता पुरी किसने बनाई? बाप कहेंगे मैंने बनाई ना। मैं बना रहा हूँ ना आसुरी पुरी को...। अच्छा, अभी ये भी तो जानते हैं कि आसुरी पुरी क्यों है, ये देखते हैं ना रावण को जलाते रहते हैं यानी समझते हैं कि ये आसुरी राज्य है। इसको

कोई दैवी राज्य तो कहेंगे भी नहीं। इनको राक्षस राज्य कहते हैं; क्योंकि जानते हैं कि यहाँ भारत में दैवी राज्य था। भारत स्वर्ग था। ये राक्षस राज्य है। बस कहने मात्र कह देते हैं। बाकी तो बिचारों को...। कोई हैं ऐसे बहुत ही, बड़े–2 एम.पी, एम.एल.ए., बड़े–2 मनुष्य कह देते हैं कि ये रावणपुरी है, वो राम पुरी। अभी देखो रावण को तो दिखलाते हैं (कि) जलाते हैं। अभी राम को तो कोई नहीं जलाता होगा। न उस राम को कोई जलाएँगे, भले ये रघुपति राघव राजा राम ...। उनको भी कोई जलाएँगे तो नहीं ना। देखो, उनको जलाते भी हैं। उनको सदैव दुश्मन ही समझते हैं। जलाते ही रहते हैं। उनकी कोई जयन्ती तो है नहीं। उनको जयन्ती दे करके फिर जला देते हैं। जैसे देवताओं को करते हैं, देवियों को करते हैं ना। ...देखो, दीपमाला के समय में देवियों की जयन्ती आती है ना, उसमें देवता भी डाल देते हैं। उनको जयन्ती दे करके फिर जला देते हैं। अभी रावण का भी तो यही हाल करते हैं। देखो, जब रावण का दिन होता है तो उनको जन्म दे देते हैं, फिर जलाकर आते हैं। यहे भी तो गुड्डिडयों की जैसी पूजा हुई ना। समझ तो कुछ भी नहीं। जैसे देवियों को जन्म दे करके, पत्थर–ठिक्कर के बना करके, सजाए करके, मेहनत करके और सेरीमनी कितनी अच्छी करते हैं और जा करके जलाकर आते हैं। वहाँ बहुत बड़े–2 आदमी, जो धंधा करते हैं, रोते भी हैं, जब घर से निकलती हैं। तुम लोग कभी वहाँ कलकत्ते में गए नहीं हो ना, बाबा तो अनुभवी है ना। वहाँ माइयाँ नरमदिल होती हैं। तो जब हम घर से देवी को डुबाने के लिए निकालते हैं तो सचमुच रोती भी हैं। तो देखो, गुड्डिडयों की पूजा हुई ना। वो जो बच्चियाँ हैं, गुड्डी बनाकर पूजती नहीं, खेलती हैं, फिर तो कभी रोतीं नहीं। ये तो फिर उन बच्चियों से भी बच्ची। उनको प्यार से बनाया, फिर उनको ले जाते हैं। जब ले जाते हैं तो ऐसे रोते हैं जैसे कोई मुर्दा ले जाते हैं और बरोबर ले करके डुबाते भी हैं। तुम लोगों (ने) देखा नहीं है; परन्तु अच्छी तरह से समझते तो हो ना कि उन चित्रों से लव हो जाता है, पूजते हैं। यूँ भी चित्रों को देख करके... परन्तु वहाँ तो प्यार करते हैं। वहाँ रोने की तो कोई दरकार नहीं है। यहाँ तो जा करके डुबाते हैं तो भी रोते हैं। तो देखो, कितनी भक्ति का अर्थ कितनी दुर्गति बाप बैठकर समझाते हैं। ऐसे तो कोई दूसरा समझते ही नहीं हैं। ...कुम्भ का मेला अभी देखो कितना....। अभी कोई सभी मनुष्य नहीं जाते। वो तो टुब्बियां लगा करके जाते रहते हैं। सभी बैठ जावें तो 80 लाख आदमी कैसे बैठ सकते हैं कहाँ। ये तो हो ही नहीं सकता है; परन्तु ये कहते हैं कि कम से कम 80 लाख टुबका मार करके जाते हैं। आते हैं जाते हैं, आते हैं जाते हैं। स्पेशल ट्रेन्स आती है, जाती है। ऐसे नहीं है कि ... इतना रह सकते हैं। रहते हैं पण्डित। उनको रहना पड़े; क्योंकि उनकी आमदनी होती है। फकीरों की आमदनी होती है, इनकी आमदनी होती है। ये आ करके लगा देते हैं... क्योंकि वहाँ अच्छी आमदनी होती है जो फिर सब ले जाते हैं अपने। इन साधुओं की हाथियों के ऊपर बड़ी सेना निकलती है। बड़े–2 बड़े मान से निकलते हैं। तो वो सब जगह रह सकते हैं; क्योंकि जो आएँगे वो उनको पैसा देते जाएँगे। जो आएँगे, उनके जिज्ञासु होंगे...रहेंगे, पैसा देकर जाएँगे। वो रहेंगे, बाकी वो जिज्ञासु थोड़े ही इतना रह सकेंगे। जगह भी नहीं है। तो देखो, ये भक्तिमार्ग के लिए बाप कितना अच्छी तरह से बैठ करके समझाते हैं। कैसे जलाते हैं, कैसे क्या करते हैं, तो बाप हर एक बात अच्छी तरह से बैठ करके बच्चों को समझाते हैं। पहले–2 ही तो बाप के लिए समझाते हैं कि बाप तो दो हैं ना। भक्तिमार्ग में एक तुम्हारा साकारी बाबा, एक निराकारी बाबा। एक विनाशी बाबा, एक अविनाशी बाबा। ज़रूर जो अविनाशी आत्मा है वो तो जो विनाशी शरीर है उनसे ऊँचा ठहरा। तो आत्मा ही पुनर्जन्म लेती है, ऐसे कहेंगे। शरीर के लिए नहीं कहेंगे कि पुनर्जन्म ये शरीर। नहीं, आत्मा को ; क्योंकि भिन्न–2 शरीर मिलते हैं आत्मा (को)। आत्मा तो एक ही है, उनको शरीर भिन्न–2 मिलते हैं। तो कोई आत्मा नहीं कहेगी (कि) पुनर्जन्म लेते हैं।... आत्मा खुद कहती है मैं एक शरीर छोड़ करके दूसरा लेता हूँ। फिर कभी क्या बनता हूँ, कभी क्या बनता हूँ। जैसे–2 कर्म करता हूँ ऐसे–2 कभी दुःखी, कभी सुखी, कभी कैसे। ऐसे हमारा पार्ट। अरे, सो भी 84 जन्म सुख और दुःख का पार्ट..। अभी इसका विस्तार तो नहीं करेंगे ना। बाप समझाते हैं ना..। देखो, ऐसे थोड़े ही है एक–2 मनुष्य का, ये कितना दुःख, कहाँ जन्म लेते हैं, क्या करते हैं, वो बैठ करके बतावें। अगर वो बतावें

फिर तो बहुत बरसों चाहिए, हज़ारों बरसों चाहिए ; परन्तु नहीं, टाइम ही थोड़ा एक मिलता है। तो इसको कहा जाता है नटशेल में सब बता देते हैं; क्योंकि वो जो कहते हैं ना कि ईश्वर हर एक को जानते हैं, अंदर की जानते हैं। अरे, वो कहाँ ज्ञान रख सकेंगे ! आत्मा में इतना क्या रखा है! आत्मा के लिए तो बाप ने समझाया कि..... मेरे में भी ड्रामा के अनुसार जो पार्ट बजाना है उनकी नूँध है, बस। अच्छा, मनुष्यों में, जो आत्माएँ हैं, उनमें भी पार्ट की नूँध है। जो नूँध है वो है ही है। वो कभी मिटती ही नहीं है। ये देखो, एक मनुष्य की आत्मा में, एक नहीं, अनेक हैं; परन्तु एक छोटी–सी चीज़ उसमें देखो कितना 84 लाख पार्ट बजाना है। अभी कोई वर्णन कर सकेंगे? नहीं। नटशेल में समझाते हैं। समझते तो हो ना! बरोबर मनुष्य 84 जन्म का पार्ट बजाते हैं। देखो, कितना बड़ा ड्रामा! अभी तुम्हारी बुद्धि में कितनी बातें आ गईं! डिटेल तो कोई पूछ भी नहीं सकते हैं। बोलते हैं पहले–2 तो बाप को समझो, मूल बात। फिर बाप से वर्सा लेने का पुरुषार्थ करो। और बातों से तुम्हारा क्या काम! एक–2 की बैठ करके बातें पूछेंगी। तो वहाँ उनको फुलस्टॉप दे देना चाहिए। जब कोई दूसरी बातें पूछे (तो) कभी भी उनसे बात नहीं करना, नहीं तो तिक–2 लग जावे। हमेशा जब कोई मिले उनको यही बताओ कि दो बाप हैं। उनका परिचय देते हो ना कि एक साकार, एक निराकार। भक्तिमार्ग में तुम पुकारते हो। बाबा (ने) तो समझा दिया है कि सतयुग में तो एक ही बाप होता है। देखो, इसको भी जिसको दादा कहते हो इनको भी एक। इनका भी फर्क है। देखो, इस समय में तुमको तीन बाप हैं। अच्छा, लौकिक बाप किसका जीता है, किसका मरा है। अच्छा, वो समझेगा कि हमारा लौकिक बाप तो मर गया है, बाकी भी तो दो बाप हैं ना– एक प्रजापिता ब्रह्मा, एक शिवबाबा। फिर ये कहेंगे कि मेरे को तो सिर्फ एक है। मैं खुद ही प्रजापिता हूँ, मेरा पिता फिर बाकी एक हो गया शिव। मेरे को थोड़े ही तुम्हारे मुआफिक दो कहेंगे। नहीं, एक है ना। एक बाबा। ब्रह्मा का ये एक। उनको बाबा कहेगा। तुमको देखो, अगर वो भी जीता होवे तो तुमको तीन हैं और बाबा का जिसका न जीता हो वो बोलेगा कि था; पर अभी मर गया है। तो ये भी कहते हैं कि मर गया है। वो अभी बाप नहीं है। मर गया, सो तो नहीं है ना। था, अभी नहीं है। तो वो भी नहीं है और मैं तो खुद ही हूँ। तुमको जिनका बाप जीता होगा वो बोलेगा कि हमारा तीन हैं। जिनका लौकिक मर गया उनका दो तो ज़रूर कहेंगे। ये तो फिर दो भी नहीं कहेंगे, ये तो एक ही कहेंगे। देखो, फर्क पड़ता है ना। वहाँ सतयुग में फिर तुम्हारा और इनका एक ही लौकिक हो जाएगा, परलौकिक नहीं होगा। ये उनको याद नहीं करते हैं। तो ये सभी कितनी गुह्य बातें हैं समझने की, बुद्धि में रखने की। ये नई बातें बैठकर समझाना है। समझाना तो ये सब बातें हैं। स्नान की भी कोई कम बात है क्या! अरे भई, ये जो स्नान करते हैं, घर में स्नान तो करते ही रहते हैं। ये पानी कहाँ से आता है? ये भी तो नदियों से आता है, बरसात से आता है। नदियाँ भी बरसात में बहती हैं। बरसात में तो देवता भी स्नान करते हैं, सब कोई करते हैं, जनावर भी करते हैं। अभी ऐसे थोड़े ही है कि यहाँ जाकर स्नान करेंगे तो ये पावन हो जाएँगे। ये तो समझते हैं कि ईश्वर है सो तो जनावरों को भी पावन करेंगे; परन्तु उनको ये मालूम नहीं पड़ता है जनावरों को कहाँ नॉलेज मिलती है। जाकर स्नान करते हैं कुम्भ के मेले पर। ये फिर समझाया जाता है कि सतयुग में ऐसे कोई भी...। देखो, ड्रामा बना हुआ है ना। तो सतयुग में न कोई बीमारी होती है, न कुछ दुःखी होते हैं, न कोई ऐसे ही जनावर होंगे; क्योंकि जैसा बड़ा आदमी ऐसा फर्नीचर, बाबा ने समझाया है। सतयुग में देवी–देवताओं के पास कृष्ण की गौशाला भी दिखलाते हैं। चलो, कृष्ण की तो नहीं कहना चाहिए, कहना तो चाहिए लक्ष्मी–नारायण की गौशाला। यानी जनावरों की गौशाला। ज़रूर सतयुग में, चित्रों में गइयाँ तो दिखलाते हैं। समझा ना। उफ! बहुत फर्स्टक्लास पहले नंबर की। उनको कोई कामधेनु नहीं कहते हैं। ये तो यहाँ गइयाँ का नाम रख देते हैं। दूध बहुत देती हैं ना तो उनका नाम भी रख देते हैं कामधेनु ; क्योंकि बहुत दूध देती है। परन्तु वहाँ तो गइयाँ ही अच्छी होती हैं, सभी जनावर अच्छे होते हैं। दूध भी बहुत देते हैं। दूध तो होता ही है ना, नहीं तो मक्खन वगैरह कहाँ से आवे; परन्तु गइयाँ बहुत फर्स्टक्लास होती हैं। उनको खान–पान बहुत अच्छा मिलता है। .... उनको कोई 'गोबर' अक्षर नहीं कहेंगे। सतयुग में कहेंगे 'गोबर' अक्षर? नहीं, गोबर तो बहुत

छी–2 अक्षर है। तो ज़रूर वो जो ऐसी चीज़ें खाते हैं तो उनमें कोई बदबू वगैरह कुछ भी नहीं होती होगी। वो तो शायद उनका जो वो होगा वो भी कोई गोल्डन कलर का होगा, जैसे गोल्डन एज है। तो कोई भी चीज़ नापसन्द की वहाँ होगी ही नहीं। लॉ है ना। अभी सोना तो हो नहीं सकेगा। फिर भी खाएगा मनुष्य तो कोई सोना थोड़े ही होगा। ये तो ज़रूर पेट से तो सबका निकलता ही रहेगा; परन्तु वहाँ न कोई बीमारी, न कोई बात, बिल्कुल कुछ भी नहीं। बिल्कुल सुखाला, सुखधाम जिसका नाम है। .. महिमा बहुत है। जैसे कहते हैं ना प्रभु की महिमा अपरम्पार है। तो प्रभु की फिर जो ये नई रचना है उसकी भी महिमा अपरम्पार है ना। मनुष्य जान नहीं सकते हैं। तुम अगर विचार करो तो देखो भक्तिमार्ग में शुरू हुआ है तो कैसे मंदिर बने हुए हैं! यानी 2500 वर्ष के बाद फिर पूजा के मंदिर बनते हैं ना। जब इतने मंदिर बनते हैं सोने के, हीरे फलाने के। आधा पहला वो तो है ही सतयुग का समय, वहाँ क्या न होगा! तो बच्चों को खुशी होनी चाहिए कि क्या होगा! स्वर्ग क्या चीज़ है! यहाँ तो उनका नाम–निशान भी नहीं है ना। यहाँ कहाँ है! मूर्ख थोड़े ही रखे रहते हैं। हीरा अभी मुसलमान लूट करके गए, फलाना लेकरके आए थे। तो भी देखो, इनके...किले वगैरह कितने आलीशान बने हुए हैं। मुसलमानों की भी बड़ी–2 अच्छी–2 मस्जिदें (हैं)। ये ताजमहल ही देखो! अभी इनको कोई बहुत बरस तो नहीं हुए हैं। ये शायद शाहजहाँ ने बनाया है। ये तो अभी मुसलमान लोग गए। पीछे उनके होते ही अंग्रेज लोग आए तो तुम्हारा कितना बरस पड़ा होगा? सात/आठ सौ बरस हुआ होगा। (किसी भाई ने कहा– उससे भी कम) चलो, पाँच सौ। तो इनको देखो ये कितनी महिमा देते हैं; परन्तु तुम तो विचार करो कि सतयुग क्या होगा! वो रह भी नहीं सकते हैं। देखो, इतना माल, सभी रह कैसे सकते हैं! तो बच्चों को अंदर में खुशी रहनी चाहिए कि हम अभी विश्व का सो भी...। वो गीत भी है ना कि हमारा राज्य सारे आकाश पर, पृथ्वी पर, सागर भी हमारा और हम(को) कोई जीत नहीं सकेगा। अभी गीत तो बनाया है ना बरोबर; परन्तु जिन्होंने गीत बनाया है उनको तो बुद्धि में कुछ भी नहीं है। तुम जो गीत बनाते हो, तुम्हारी खुशी का पारा चढ़ता है, तब बाबा कहते हैं कि ऐसे–2 जो रिकॉर्ड हैं, जब माया मूर्छित कर देती है या कोई कारण उदास हो जाते हैं... क्योंकि अभी तो चलते रहते हैं ना। कोई–2 साहूकार है, घाटा पड़ जाता है तो उदास हो जाते हैं। अभी कोई सम्पूर्ण तो बना नहीं है जो उदासाई न हो। उदासाई तो होगी। अपूर्ण है तो ज़रूर उदासाई होगी ..... ये तो जब सम्पूर्ण हो जाएँगे तब इस सृष्टि में रहेंगे ही नहीं, जहाँ ये घाटा–वाटा, गिटपिट–गिटपिट रहती है। यह तो बच्चों को समझा दिया है। बच्चे खुद समझते हैं अच्छी तरह से और बच्चों को गद्गद होना चाहिए। भले शरीर को भी कुछ हो जाता है; परन्तु आत्मा को जो ज्ञान मिलता है, आत्मा को तो मालूम है कि मेरा ये शरीर पुराना है। इसको तो जब कोई बीमार पड़ता है तो मैं आत्मा अभी इस पुराने तन से पुरुषार्थ कर रहा हूँ। सो ये पुराने को तो पिछाड़ी की चत्ती लगेगी। जाने वाला है। जाने वाले शरीर को तो ज़रूर कुछ न कुछ गिटगिट होती ही रहती है। फिर भी योगबल से कुछ तो कट जाते हैं बहुत ही, जो इतनी तकलीफ न हो; क्योंकि जानते हैं ना। तो जब देहीअभिमानी हैं तो बीमार भी पड़ेंगे तो भी अंदर किसका आत्मा फिर चलेगा ना– अब ये शरीर तो पुराना है। इनको तो ये कुछ कीड़ा लगता ही रहेगा। अभी छोड़ने को तो है ही। बाप को तो याद करते रहेंगे। ऐसे है ना। तो बाप को याद करते रहेंगे और ये भोगना भोगेंगे तो वो भोगना उनको इतनी भोगना नहीं लगेगी; क्योंकि भविष्य का इतना बड़ा जो सुख लगा हुआ है, कोई कम थोड़े ही है, 21 बरस तो हम कहते हैं; परन्तु नहीं, बाबा बोलते हैं ये थ्री/फोर्थ लाइफ का सुख है। आधा भी क्यों हुआ? बाप कहेंगे आधाउधी तो इनमें बच्चों को फायदा ही क्या ! सुख ही कहाँ हुआ तब जो आधाउधी हो सो! ये तो आधा सुख, आधा दुःख, बस। नहीं–2, बाबा कहते हैं भक्तिमार्ग (के) शुरुआत में भी तुम्हारी आयु बड़ी है, सुख है। देखो, धन कितना बहुत है! तुम थ्री/फोर्थ... क्योंकि बाप भी बच्चों को सुख का हिस्सा तो जास्ती देंगे ना। तभी समझाते हैं बच्चे, तुमको थ्री/फोर्थ सुख मिलता है, सो भी धीरे–2 जूँ के मिसल कमती होता जाता है, कमती होता जाता है। फिर पिछाड़ी में जब तमोप्रधान बनते हो...। सतोप्रधान,सतो,रजो तुमको इतनी तकलीफ नहीं होती है, बाकी तमोप्रधान जब व्यभिचारी

भक्त बन जाते हैं तब फिर तुमको कुछ थोड़ा जास्ती...। थोड़ा–2 ऐसे बढ़ता जाता है। गिरते हैं तो डाके–2 गिरते हैं, आते हैं नीचे और यहाँ तो देखो एक ही जन्म में एकदम चढ़ जाते हैं। इसलिए बच्चों के लिए ये सीढ़ी भी बनाई है– ये उतरती कला और चढ़ती कला। अभी तुम बच्चों को तो अच्छी तरह से बुद्धि में है सेकेण्ड में चढ़ती कला कि मनुष्य को आकर देवता बनाते हैं। वो कहते भी हैं ना– सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। फिर शास्त्रों में भी कहते हैं– मानुष को देवता किये करत न लागी वार। ये देखो, उसमें भी कहते हैं, उसमें भी लगा है– करत न लागी वार। तो देखते हो कि बरोबर इस एक अंतिम जन्म में तुम पढ़ाई पढ़ते हो। अच्छा, टाइम लगना पड़ता है। बुद्धि में भी आता है कि हाँ, जहाँ जीना है तहाँ याद में रहना है। पीछे धीरे–2 बढ़ती जाएगी, बढ़ती जाएगी और अंत तक बढ़ जाए। अभी फिर यात्रा के ऊपर सारा मदार रहा ना। नहीं तो रूहानी यात्रा का नाम कौन जानते हैं! किसको कहो तो समझेंगे? अगर उनको कहो मन्मनाभव–मद्याजीभव का अर्थ बताओ, फट बता देंगे। बरोबर ये तो याद है। बाबा कहते हैं मामेकम् याद करो। तो रूहानी यात्रा हुई ना। देखो, हम विस्तार से बताते हैं। वो कभी भी नहीं समझा सके कि मन्मनाभव–मद्याजीभव का अर्थ क्या है। भले लिखा भी है मुझे याद करो और चतुर्भुज को याद करो। ऐसा अर्थ लिखा हुआ है; परन्तु मनुष्य कोई समझ थोड़े ही सकते हैं कि इसका अर्थ क्या है। अभी भी दिल से लगता है बच्चों को कि बरोबर मन्मनाभव यानी बाप कहते हैं मुझे याद करो। सो तो हम याद करते हैं। किसलिए? विकर्म विनाश हो जाएगा। अभी कहते भी हैं बाप कहते हैं कि मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हारा सब पाप नष्ट हो जाएगा। बरोबर लिखा हुआ है ना; परन्तु कोई समझते थोड़े ही हैं कि पाप विनाश होगा, फिर क्या होगा, कुछ भी नहीं। कोई टेस्ट थोड़े ही आती है। अभी तो तुमको अच्छी तरह से टेस्ट आती है ना ; क्योंकि निश्चय हुआ कि बरोबर बाप को याद करने से हमारी खाद निकल जाएगी। हम गोल्डन एज में, हमको यहीं जाना है; क्योंकि आना ही है फिर हमको सच्चा सोना बन करके। तो सच्चा सोना यहाँ बनेंगे। नहीं बनेंगे तो फिर इस याद की यात्रा की बदली में पीछे सज़ाएँ खानी पड़ेंगी। आग में डालेंगे, चीरेंगे, फलाना करेंगे, सज़ाएँ तो बहुत ही दिखलाई गई हैं ना। तो बाप बैठ करके सभी बातें बिल्कुल अच्छी तरह से समझाते हैं। ये पढ़ाई है ना। तो पढ़ाई कैसे होती है कोई मनुष्य थोड़े ही जानते हैं। भगवान ने कैसे बैठ करके, भला कृ ष्ण ही, अभी कृष्ण तो हो नहीं सकता है यानी ये भी नहीं कह सकते हैं कि कृष्ण के तन में। अगर कृष्ण के तन में तो भी कृष्ण का रूप तो होगा ना। यहाँ तो बाप बैठकर समझाते हैं कि ये साधारण मनुष्य तन है। ये बहुत जन्म के अंत का पतित चोला है और मैं पतित नंबर वन... क्योंकि उनको नंबर वन पावन बनाना है। पतित तो सभी ठहरे ना। हिसाब से तो सभी पतित ठहरे ना। अभी ऐसा कोई ब्रह्मा को पतित कहेंगे? नहीं; क्योंकि वो समझते हैं कि ब्रह्मा तो सूक्ष्मवतन का है; परन्तु यहाँ कहते भी हैं प्रजापिता ब्रह्मा। तो ज़रूर स्थूलवतन में भी होगा। अभी फर्क क्या होगा, ये तो तुम जानते हो। मुनष्य तो कोई नहीं जान सकते हैं। गाते तो हैं ना प्रजापिता। तो प्रजापिता ज़रूर यहाँ चाहिए ना। प्रजा यहाँ होती है, कोई सूक्ष्मवतन.....। ज़रूर यहाँ होगा प्रजापिता। तो इस पिता ब्रह्मा में और उस ब्रह्मा में फर्क, ये भी कोई नहीं जानते हैं। अभी तुम समझ गए कि बरोबर हम ये जो पतित है सो पावन ऐसे सूक्ष्मवतनवासी फरिश्ते बन जाएँगे, जहाँ हमारी ये हड्डी नहीं रहती है। पीछे वो सूक्ष्मवतन भी गुम हो जाता है, फिर बाकी.. हम आत्माएँ रहते हैं। तो तीनों ही लोकों का भी तो ज्ञान देना होता है ना कि ये सूक्ष्मवतन किसलिए होते हैं। अभी देखो इस समय में सूक्ष्मवतन में कितने जाते हो! बहुत ही जाते हैं। बहुत ही जाएँगे। अभी ये तो थोड़े हैं। अभी तो कितने सेन्टर्स खुलेंगे, कितने ध्यान में जाएँगे, कितने जाते रहेंगे। पिछाड़ी में आना–जाना तो बहुत तकड़ा–2 हो जाएगा; क्योंकि अभी तो हम जैसे कि मूलवतन के दर पर आकर पहुँचेंगे ना। सूक्ष्मवतन, पीछे मूलवतन तो सामने खड़ा है। पीछे हम यहाँ लौट करके आएँगे। ये भी तुम बच्चों में बुद्धि में अच्छी तरह से नॉलेज है। 84 (जन्म की) नॉलेज जो बाप बैठकर के समझाते हैं तो बुद्धि में

ठहरनी चाहिए, किसको समझानी भी चाहिए ना। उसमें भी बाबा कहते हैं अलफ से ही शुरू करनी होती है। अरे, मनुष्य पढ़ते हैं तो पहले अलफ,बे,पे,ते पढ़ते जाते हैं। यहाँ ए,बी,बी,सी,डी ऐसे पढ़ते हैं। ये अलफ और बे यहाँ बहुत मशहूर है। वो उर्दू/सिंधी अक्षर है ना। मगध देश में अलफ–बे तो पढ़ते हैं ना। इनका ये जन्म तो मगध देश में है ना। तुम समझते हो शास्त्रों में भी लिखा हुआ है कि मगध देश में जन्म लिया था। अभी मगध देश माना मगरमच्छों जैसा देश। तो बरोबर सिंध है अभी मगरमच्छों वाला देश। फिर भी देखो मगरमच्छ देश में रह करके फिर गाँवड़े का छोरा भी बना। देखो, कहाँ जाकर बात लगी है! अच्छा, छोरे से फिर छोरे से गरीब में तो नहीं आएगा ना। बाबा कहते हैं साधारण...। मैं गरीब के तन में नहीं आया। वो भी बता देते हैं। ....हम भी कहते हैं कोई एक साहूकार होगा, 5/10 साधारण होगा, बाकी गरीब होगा। बाबा तो एक–2 अक्षर करके सब अच्छी तरह से समझा भी देते हैं कि मैं इनको साधारण क्यों कहता हूँ। था छोरा, अभी साधारण है। क्यों? ये समझते हैं ना। तो ये जो भट्ठी बनेगी, उनकी सम्भाल कैसे होगी? ये देखो, एक का दृष्टांत कैसे देवें ? ... सिंधी में पहाका है– हथ जिनी जो.. पैजो पूर से पोचन। कभी सुना है सिंधी में ? तो देखो, जब एकदम सरेण्डर कर देते हैं तो पहले नंबर में चले गए और जाना भी ज़रूर है। जो पहले नंबर में थे सो पिछाड़ी के नंबर में, पिछाड़ी के नंबर में सो पहले नंबर में। अभी ये तो समझते हो ना कि ये पहले नंबर में था सो पिछाड़ी के नंबर में है; क्योंकि पिछाड़ी के नंबर से पहले नंबर में जाना है। तो ये सभी बातें बाप बैठकर बच्चों को अच्छी तरह से समझाते भी हैं और फिर रास्ता भी बताते हैं कि ऐसे–2 अपने मित्र–संबंधियों को...। चैरिटी बिगन्स एट होम। देखो, पहले–2 घर में आए ना। घर में शुरू हुआ ना। घर के भाँती आए, मित्र–संबंधी आए, पीछे सभी बाहर के आ गए। तो तुम हर एक बच्चे का भी रास्ता यही है अपने–2 उनको...। अभी ये प्वाइंट्स तो बहुत अच्छी मिली हैं ना। दिन–प्रतिदिन समझानी भी जास्ती मिलती रहेगी, तुम्हारी धारणा भी अच्छी होती जाएगी, जो–2 पुरुषार्थ करते हैं और फिर दिल भी होगी कि हम हमारे भाई को भी साहूकार बनावें। अरे, जैसे कोई साहूकार होता है तो पहले सालों को, मित्र–संबंधियों को चढ़ाते हैं ना; क्योंकि वो समझते हैं मित्र–संबंधी तो घर के हैं ना। वो चोरी–चकारी तो नहीं करेंगे, ठगी तो नहीं करेंगे, हमको धोखा तो नहीं देंगे। बाहर वाला कोई धोखा भी दे देगा। तो इसलिए चैरिटी हमेशा...। तो घर वालों को पहले–2 कोशिश करके उठाना चाहिए। पहले घरवालों को उठा, पीछे जो उठा। देखो, ऐसे है ना। अभी बाबा के ही देखो, घर वाले कौन उठे! कहाँ से जाकर उठे! देखो, कौन–2 उठे। बच्चे नहीं उठे। बच्ची उठ पड़ी। भतीजा उठ पड़ा। बच्चा नहीं उठ पड़ा। फलाना उठता है। तो चैरिटी आई ना। तो वैसे फिर बच्चों को भी कोशिश करना चाहिए। जो भी हैं, बहन को, भाई को ये करें। इनको स्वर्ग का मालिक बनावें। इनका कल्याण करें, बस यही चिंतन लगना चाहिए। बाबा को भी तो ये चिंतन है ना कि बच्चों को कैसे हम सुखी बनावें। अरे, हर एक बाप को यही अंदर में रहता है कि हम बच्चों को कैसे सुखी बनावें, कैसे साहूकार बनावें। फिर वो लोग तो बहुत ही वो करते हैं। यहाँ तो ज्ञान की बातें हैं। तो जैसे बाप को चिंतन रहता है कि बच्चों को अभी हम सुखी बनावें। मेहनत करते हैं ना। देखो, कितनी युक्तियाँ बताते रहते हैं– ऐसे करो, ऐसे करो। ये पतित हैं, वो पावन। तुम्हारे दुश्मन तो सभी बनेंगे। ये भी तुम समझ सकते हो कि जब ये गीता का मालूम हो जावे कि ये सब झूठ बोलते हैं। अरे, गीता का भगवान तो परमपिता शिव है, न कि कृष्ण। कृष्ण ..सतयुग के आदि में वैकुण्ठ का मालिक कैसे बना? किसने इनको राजाई दी? कलहयुग में तो कोई बैठा ही नहीं है। कोई राज्य ही नहीं है। तो देखो, होता है ना। बुद्धि में तो बैठना चाहिए कि ज़रूर आपे ही तो अपना राज्य स्थापन नहीं किया। नहीं, कोई की मत पर। ये देखो, श्रीमत पर ये श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ....। तो तुम बच्चों को भी उनको ऐसे ही ले करके, बाप का परिचय दे, पीछे उनको अपना समझा दो कि उस बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। वो तो बाप राजयोग सिखलाते हैं। अच्छा, अगर अभी सन्यासियों को ये मालूम पड़े, बाबा जो जोर देते रहते हैं

कि गीता का भगवान वो भगवान है, न (कि) कृष्ण। तो क्या समझती हो? जो भी गीता सुनाने वाले होते हैं उनकी क्या हालत होगी! देखो, ये पिछाड़ी को आ करके होगी ना। अभी रोला मच जावे। हमारी स्थापना हुई नहीं है। बहुत गिटपिट हो जावे। पता नहीं क्या हो जावे ; परन्तु ये होने का है नहीं। यह तो चलते–2 पिछाड़ी में आ करके कुछ समझते हैं, जिस समय कि विनाश होता है। वो अभी कुम्भकरण की नींद में, पहले नम्बर में तो वो सोए पड़े हैं, तो वो भी पिछाड़ी में जागते हैं। नाम लिखा हुआ है ना– भीष्मपितामह, आचार्य फलाना। मालूम पड़ जावे कि गीता का भगवान...। ये गीता झूठी कर दी है। ये भागवत झूठी, शास्त्र सब झूठा। तो.. हाहाकार मच जावे। वो जिज्ञासु लोग गुरुओं को पता नहीं क्या करें। तुम हमको धोखे में डालते आए हो!... नंबरवार गुरू तो एक/दो को गद्दी में बैठते हैं ना। तो विचार आता है कि अगर ये एक बात भी निकल जाए तो हाहाकार मच जावे एकदम। तो ऐसे जल्दी नहीं निकल सके। पुरुषार्थ तो करना चाहिए ना। रड़ियाँ तो मारनी चाहिए ना– भई, गीता का भगवान कृष्ण नहीं है, गीता का भगवान तो भगवान है। वो तो सबका निराकार भगवान है। वही पतित–पावन है। कृष्ण को पतित–पावन नहीं कहेंगे। उनको तो कोई बहुत धर्म में पूजते भी नहीं हैं। अरे, यहाँ भारत में ही दयानन्द था, वही इन मूर्तियों को नहीं मानते थे। मुसलमान भी नहीं मानते हैं। कभी भी शिव का लिंग पत्थर को फेंकेगा नहीं जब उनको मालूम पड़ेगा तो ; क्योंकि वो भी परमात्मा को तो मानते हैं ना। रूहों को तो मानेंगे ना। तो ये कितनी समझानी बच्चों को मिलती है। फिर भी बाप कहते हैं वो बच्चों को भी उठाते जाओ, एक तरफ में फिर उन बड़ों को भी। आते रहो, रड़ी मारते रहो। फिर गवर्मेन्ट को लिखना चाहिए कि कभी भी ये पंचायती गवर्मेन्ट फ़तह नहीं पा सकेगी जब तलक बाप को बाप नहीं मानेंगे और ये ग्लानि करना छोड़ देंगे। देखो, हम भी तो ग्लानि करते थे ना। अभी हम छोड़ दिया है। बाप से हम वर्सा पा लेते हैं; क्योंकि बाप ने आ करके सब समझाया है और कहते हैं सबको समझाओ। तो देखो, समझाते रहते हैं। तो कहाँ भी जाते हैं ये सब दिल्ली में, अभी देखो आते तो रहते हैं ना, अभी शिवजयन्ती भी तो आएगी। तो उनको यही कहना चाहिए– पहले ये तो ख्याल करो कि शिवजयन्ती, श्रीकृष्ण जयन्ती और गीता जयन्ती। अभी शिव कौन? वो तो निराकार है। तो भगवान किसको कहें– साकार को कहें या निराकार को कहें? साकार तो पुनर्जन्म में आते हैं। वो तो पुनर्जन्म रहित हैं। अभी भगवान किसको कहा जाए? तो भगवान एक ठहरा ना। बाप ठहरा ना। तो भगवानुवाच जो गीता में है अभी वो कौन ठहरा? ये तो बहुत समझाना है ना। ये है तो रिलीजियस माइण्डेड। ये शास्त्र जो भी हैं वो भी रिलीजियस माइण्डेड हैं। वो नेहरु नहीं। ये रिलीजियस माइण्डेड हैं कुछ और बड़े–2 भी हैं। तो क्या ये सब, किसको–2 पकड़ें? कोई बड़े को पकड़ना चाहिए जिसका कुछ आवाज़ भी हो। तो बाबा कभी–2 कहते हैं जाओ, पिलानी है ना; क्योंकि इस समय में ये जो बिरला लोग हैं, ये बड़े साहूकार हैं। बड़े पैसे वाले हैं, बात मत पूछो। ये रहते हैं पिलानी में। वहाँ भी लक्ष्मी–नारायण का मंदिर बना हुआ है। बाबा बीच में कहते थे कि लक्ष्मी–नारायण का फर्स्टक्लास एक चित्र जिसमें ये लिखत भी हो, कृष्ण भी नीचे हो, ये जा करके वहाँ पिलानी में प्रदर्शनी करें। मना तो कोई को भी नहीं है, कहाँ भी करें। वहाँ उनको समझावें भी और उन लोगों को ...बैठ करके नॉलेज देवे। तो वहाँ भी आवे, कोई समझे कि ये सब बिचारे धोखे में फँसे हुए हैं। मंदिर तो बनाते हैं। वहाँ भाषण तो कर सकते हैं ना। मंदिर तो बनाते हैं; परन्तु जैसे गुड्डिडयाँ बनाते हैं। ये भी तो पुराने हो जाते हैं, फिर नए बनाते हैं। अभी इनके ऑक्युपेशन का पता ही नहीं है। इसको तो मूर्ख कहा जाए। यानी मंदिर उन लक्ष्मी–नारायण का बनाते हैं, जिनकी बायोग्राफी का कोई पता ही नहीं है– ये कब आए थे, राज्य कैसे लिया। तो वहाँ बैठ करके समझाने से घर से उनके भाँती आएँगे, अभी कोई न कोई तो उठ जाएगा ना। तो देखो, ऐसे–2 बड़े–2 खयालात भी रखने चाहिए। घरों में बैठ करके अपने मित्र–संबंधियों को भी उठाना चाहिए। घर का और पर का दोनों सर्विस करने का हिम्मत रखनी चाहिए। अभी जब तुम बाप के पास

जन्म लिया है, बाबा के बने हो तो ये सर्विस करनी चाहिए। दिल में रहना चाहिए। बाकी जो पुराने संस्कार हैं गंदे, डर्टी, एकदम जनावरों जैसे, जिसमें पाप ही पाप होता है, और कुछ बिल्कुल होता ही नहीं है। पूजा में भी पाप, खाने में पाप.... पाप आत्माओं की दुनिया है ना। तो इतना पाप किया है। अब जब बाप (से) पुण्यात्मा बनते हैं तो उनकी मत पर चलना चाहिए, नहीं तो अपना खाता घाटे में डाल देंगे। पीछे बहुत पछताएँगे, हाय–2 करेंगे कि बापदादा, फिर भी दोनों ही हैं ना, हमको कितना समझाते हैं पाप तो एकदम बिल्कुल नहीं करो; क्योंकि तुम्हारा सौगुणा पाप हो जाता है। तुम्हारी दिल बहुत खाएगी आगे चल करके जब बहुत साक्षात्कार...। क्योंकि बाप कहते हैं कि पाप करते हो तो भी अभी बता दो, नहीं तो मल्टीप्लीकेशन होता जाएगा, बिल्कुल जोर से मल्टीप्लीकेशन। आगे तो वन टु टू परसेन्ट, अभी वन टू 100 परसेन्ट चढ़ता जाएगा। बहुत–2 पछताएगा, बहुत दुःखी होगा, बहुत सज़ाएँ खाएँगे; इसलिए बाबा कहते रहते हैं दिल में जो कुछ भी पाप किया हुआ हो, पीछे बाबा का बन करके या अभी भी करते हो तो पाप करना छोड़ दो। दिल साफ तब मुराद हासिल होगी। दिल में शैतानी होगी तो कभी भी मुराद हासिल नहीं हो सकेगी। शैतानी माना ही तुम रावण के बने हो। बाप तो कितना अच्छी तरह से समझाते रहते हैं। समझ करके सर्विस में भी लगना चाहिए। यहाँ हमारे बच्चों को कोई धंधाधोरी तो है नहीं। उनका तो धंधा ही ये है सर्विस। पीछे जो सर्विस कर सके। यज्ञ के लिए जितनी करेंगे सच्चाई से, छोटी करे, मोटी करे, हल्की करे; पर सच्चाई से। उनमें कोई भी दिल में गंदगी नहीं होनी चाहिए, नहीं तो गंदगी बहुत गंदा कर देगी, बिल्कुल बासी बना देगी। बाबा कहते हैं ना सच्ची दिल पर, तो सच्ची दिल पर माना दिल में तुम आत्मा है ना, तो सच्ची आत्मा के ऊपर सच्चा परमात्मा बहुत राज़ी रहेगा। ये तो अज्ञान में भी है। बच्चे सपूत होते हैं, फिर देखो कितना बाप की इज्जत रखते हैं। बोलते हैं तुम बैठ जाओ, धंधा–वंदा नहीं करो, हम तुमको पहुँचाते रहेंगे। देखो, ऐसे भी तो बच्चे होते हैं ना। अरे, कोई–2 बच्चे तो बाप को मार डालते हैं, उनकी मिल्कियत...। मैंने बहुत ऐसे दृष्टांत बताए हैं कि पैसे के ऊपर लड़कर भाई को मार देते हैं, फलाने को मार देते हैं। अरे, ऐसे तो अख़बार में बहुत ही पड़ता रहता है। अच्छा, ले आओ टोली। .. .मैं बोला खर्ची दो। तो देखो...बोला– जाओ पढ़ने। मैं बोला– नहीं, पढ़ाने जाता हूँ। शिवबाबा पढ़ाते हैं ना, तुम पढ़ते नहीं हो। ...तो जाओ पढ़ने। तो पढ़ते भी हैं, पढ़ाते (भी) हैं। सो तो तुम भी करते हो। तुम सिर्फ पढ़ते थोड़े ही हो, पढ़ाते (भी) हो। उसने कहा– अच्छा, हम पढ़ने जाता हूँ, खर्ची दो। देखो, खर्ची भी दे दिया।

मीठे–2, सिकीलधे! बाबा, सिकीलधे क्या गुम हो गए थे? हाँ बच्चे, तुम ठीक 5000 वर्ष गुम थे, फिर से आकर मिले हो। ऐसे हर 5000 वर्ष बाद तुमको मिलते हैं वर्सा देने के लिए; क्योंकि ये रावण तुम भारतवासियों का वर्सा छीन लेते हैं; क्योंकि भारतवासी ही स्वर्ग तो भारतवासी ही नर्क। और कोई भी खण्ड वालों को स्वर्गवासी–नर्कवासी कभी नहीं कह सकते हैं। कोई भी दूसरे धर्म को सिर्फ सिवाय आदि सनातन देवी–देवता। भले वो लोग समझते हैं मनुष्य बहिश्त...। भई हाँ, गार्डन ऑफ अल्लाह कहते हैं, खुदा का बगीचा ; परन्तु कोई वो थोड़े ही आते हैं। जानते हैं कि खुदा बहिश्त स्थापन करते हैं; परन्तु रहते कौन हैं वो किसको मालूम नहीं है। अरे, इनको भी मालूम नहीं है जो बहिश्त में रहते हैं, स्वर्ग में रहते हैं। अभी मालूम पड़ता है कि वाह! ये भारत ही स्वर्ग बनता है और हम उस स्वर्ग में रहते हैं। वही भारत फिर नर्क भी बनता है। स्वर्ग सिर्फ भारत बनता है, इसके लिए भारत की बड़ी महिमा है। बड़ी भारी महिमा है। बड़े ते बड़ा तीर्थ है भारत ; परन्तु कृष्ण का नाम बदल जाने से, फिर ऐसे ही कहेंगे कि ड्रामा। अच्छा! मीठे–2, सिकीलधे बच्चों प्रति याद–प्यार और गुडमॉर्निंग।